जी-मेल का सच और अफ़वाह का खेल

आओ कहानी सुनाऊ, सबको,
आज के आधुनिक युग की, इंटरनेट के ज़माने की,
अलमारी के दस्तावेजों की नहीं!
वर्चुअल वर्ल्ड के दस्तावेजों की!!

किसी प्रभारी अधिकारी ने,
ऑफिशियल काम की नींव रखने को,
ई-मेल भेजने, जवाब लिखने, दस्तावेज़ सँजोने को।
बनाया जी-मेल का अकाउंट।

समय बदला, साथी भी आगे बढ़ गया,
नया आया और शोर मच गया–
"अरे, उसने तो मेल का एक्सेस ही नहीं दिया,
कितना स्वार्थी था, सब कुछ साथ ले गया!"

पर जी-मेल हंसा और बोला ज़ोर से:
"अरे भोलो, ये पासवर्ड है!! नहीं है आलू-प्याज़ की थैली!
निजी है खाता, पहचान है खास, नियम है सख़्त,
एक्सेस की बात ही है बेमतलब और व्यर्थ।"

अगर यकीन था कि है 'अधिकार',
तो जाने से पहले क्यों नहीं माँगा पासवर्ड?
क्यों होने दिया रिलीव यूँ ही चुपचाप,
अब पीछे से रोना, बस दिखावे का है खेल।

सोचो ज़रा–अगर पासवर्ड दे दिया,
और किसी ने मेल का किया ग़लत उपयोग?
दोष किस पर लगेगा? सोचा कभी किसी ने!!
उसी पर ना, जिसने पासवर्ड थमाया।

और सच्चाई ये थी– कि जाने से पहले,
उसने कहा था साफ़-साफ़,
क्यों कि मेल है निजी,
और ट्रांसफर भी नहीं हो सकता!

इसलिए, नया मेल बनाओ,
और भेज दो सारे मेल, सारे दस्तावेज़,
नए ठिकाने पर!! एक नहीं, दो नहीं,
जाने से तीन-चार महीने पहले कहा था!!

तीन-चार महीने में ये काम हो सकता था सहज,
उस समय लगा जिसने करना था व है लापरवाह।
क्या पता था? मंशा ही कुछ और थी!!
शायद करना था प्रहार जाने वाले पर!

निजी जी-मेल का पासवर्ड माँगना,
कहाँ तक है सही? खुद में है गुनाह,
और 'नहीं दिया' लेकर भाग गया,
का रोना बस है तमाशा।

तो अगली बार जब तुमसे कोई कहे,
"उसने एक्सेस नहीं दिया",
समझ लेना–बात ही है बेमेल और तिरछी।
नियम यही कहते हैं–मेल है निजी,

गलती उस की नहीं जो नियम निभाए,
गलती उस की है जो अफ़वाह उड़ाए।
जी-मेल बोलता है, नियम साफ़-साफ़:
पासवर्ड न साझा हो–खाता है निजी।

अंत में बात है साफ़-साफ़,
निजी मेल पर नहीं कोई अधिकार।
तो इस लिए एक्सेस की हो बात,
याँ, ट्रांसफ़र की गुहार हो।

वो है बिलकुल निराधार।
वो है बिलकुल निराधार।

..... डॉ विभा शर्मा
सितम्बर ३०, २०२५